Central University of Rajasthan

Center for Distance and Online Education (CDOE)

Dear Learner,

Greetings from the CDOE!

As you are aware, every student enrolled in the ODL Programme is required to write and submit assignments for each course. These assignments form an important component of the continuous assessment and carry **30% weightage** of the overall grade for each course.

Please carefully note the following instructions:

General Instructions

1. Please remember to attach the designated cover page on every assignment you submit. The format of cover page is attached for your reference.
2. All sections of the assignment are compulsory in nature. All questions are to be attempted, except for those where options are provided.
3. Please write the answer mentioning the correct corresponding question number given in the assignment.
4. Please write on continuous pages and number each page.
5. All assignments should be handwritten. Typed or printed assignment will not be accepted.
6. it is strongly recommended to keep a copy (photocopy or scanned) of the assignment sent by you for your record.
7. **The last date for submitting assignments is 30.11.2026.** Submission of assignments is required to appear in the End Semester Examination.
8. Assignments can be deposited at CDOE, Curaj or sent through post to **Director, Centre for Distance and Online Education (CDOE), Room 102, Administration Building, Central University of Rajasthan, Bandarsindari, District: Ajmer – 305817, Rajasthan**.

Director

Centre for Distance and Online Education (ODL & OP)

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय

CENTRAL UNIVERSITY OF RAJASTHAN

Assignment

Open and Distance Learning Programme

Learner's Name: _____

Enrollment Number: _____

Academic Year and Session: _____

Programme Name and Code: _____

_____

Course Code: _____

Course Title: _____

_____

_____

Learner's Signature

Centre for Distance and Online Education (CDOE)

Room 102, Administration Building, Central University of Rajasthan

N.H. 8, Bandarsindari, District: Ajmer – 305817, Rajasthan

Website: www.curaj.ac.in | Email: cdoe@curaj.ac.in | Phone: 01463 257 556

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम का नाम : एम. ए. (हिंदी) **प्रथम छमाही** **कार्यक्रम कोड : ODLMAH**

निर्देश :

1. एम.ए. (हिंदी) कार्यक्रम में शिक्षार्थी के सतत मूल्यांकन के लिए पाठ्यक्रम की प्रत्येक पाठ्यचर्या (कोर्स) में दो सत्रीय कार्य की योजना की गयी है।
2. शिक्षार्थी दोनों सत्रीय कार्य पूर्ण कर नियत अवधि में जमा करवाने पर ही संबंधित पाठ्यचर्या (कोर्स) की सत्रांत परीक्षा में उपस्थित हो सकता है।
3. प्रत्येक सत्रीय कार्य पंद्रह (15) पूर्णांक का है, इस प्रकार से प्रत्येक पाठ्यचर्या (कोर्स) के लिए सत्रीय कार्य के लिए कुल तीस (30) पूर्णांक नियत है। सत्रीय कार्य में प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच (05) अंक निर्धारित है।
4. प्रत्येक सत्रीय कार्य में शिक्षार्थी को तीन प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं, शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह आंतरिक विकल्पों को ध्यान में रखते हुए तीनों प्रश्नों को हल करने का प्रयास करेगा।
5. सत्रीय कार्य शिक्षार्थी की स्वयं की हस्तलिपि में होना आवश्यक है, टंकित एवं प्रिंटेड सत्रीय कार्य स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
6. शिक्षार्थी नियत अवधि में सत्रीय कार्य पूर्ण कर निम्नलिखित पते पर डाक द्वारा भेजें अथवा व्यक्तिशः उपस्थित होकर जमा करवाएँ।

   सत्रीय कार्य जमा करवाने का पता :

   निदेशक, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, कमरा संख्या – 102, प्रशासनिक भवन, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बांदर सिंदरी, जिला – अजमेर, 305817, राजस्थान

   Director, Centre for Distance and Online Education (CDOE), Room - 102, Administration Building, Central University of Rajasthan, Bandarsindari, District - Ajmer – 305817, Rajasthan.

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 साहित्य इतिहास लेखन में कालविभाजन की कालानुक्रम एवं विधेयवादी पद्धतियों की व्याख्या करते हुए हिंदी साहित्य के इतिहास के कालविभाजन की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 02 'साहित्येतिहास' का आशय स्पष्ट करते हुए 'हिंदी साहित्य इतिहास' लेखन के आरंभिक प्रयासों पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 03 रासो काव्य परंपरा का परिचय देते हुए 'बीसलदेव रासो' काव्य की रासो काव्य के रूप में उपयुक्तता का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 04 'भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानंद' इस पंक्ति की व्याख्या करते हुए भक्ति आंदोलन के उदय एवं प्रसार की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 05 निर्गुण भक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए प्रमुख संत - सूफी कवियों एवं उनकी रचनाओं का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 सगुण एवं निर्गुण भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ उजागर कीजिए। 05

प्र. 02 "हिंदी का भक्तिकाल लोक-जागरण की अभिव्यक्ति है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए। 05

प्र. 03 हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के संप्रदाय-निरपेक्ष भक्त कवियों पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 04 रीतिकाव्य का आशय स्पष्ट करते हुए रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, एवं रीतिमुक्त काव्यधाराओं पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 05 रीतिकाल के लिए 'श्रृंगारकाल' नामकरण की उपयुक्तता पर विचार कीजिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : हिंदी भाषा का स्वरूप एवं इतिहास **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH02**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 भारोपीय भाषा परिवार क्या है ? विस्तृत विवेचना कीजिए। 05

प्र. 02 हिंदी भाषा के उद्भव पर प्रकाश डालते हुए पश्चिमी हिंदी एवं पूर्वी हिंदी विभाजन की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 03 पुरानी हिंदी से आप क्या समझते हैं ? विस्तार से बताइए। 05

प्र. 04 निम्नलिखित हिंदी की बोलियों में से किन्हीं दो का विस्तृत परिचय दीजिए। 05

i. अवधी, ii. ब्रज, iii. बुन्देली, iv. कन्नौजी

प्र. 05 'देवनागरी लिपि के मानकीकरण की आवश्यकता' विषय पर आलोचनात्मक निबन्ध लिखिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 भाषा के रूप में हिन्दुस्तानी का आशय स्पष्ट करते हुए वर्तमान भारत में हिन्दुस्तानी की वस्तुस्थिति उजागर कीजिए। 05

प्र. 02 स्वन की अवधारणा एवं परिभाषा प्रस्तुत करते हुए स्वन परिवर्तन के कारणों की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 03 संपर्क भाषा क्या है ? भारत में संपर्क भाषाओं की आवश्यकता एवं हिंदी की संपर्क भाषा के रूप में वस्तुस्थिति का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 04 राजभाषा के रूप में हिंदी के विकास पर टिप्पणी लिखिए । 05

प्र. 05 भाषा में शब्द एवं अर्थ के परस्पर संबंध की व्याख्या करते हुए अर्थ-विस्तार एवं अर्थ-संकोच को उदाहरणों के माध्यम से समझाइए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH03**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 "जायसी द्वारा प्रस्तुत नागमती का विरह-वर्णन हिंदी साहित्य की अद्वितीय रचना है।" आलोचक विजयदेवनारायण साही के इस कथन का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 02 " 'भ्रमरगीत सार' व्यंग्य एवं उपालंभ का काव्य है।" इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 03 'नागमती वियोग खंड' के संदर्भ से जायसी के विरह वर्णन की विशेषताएँ रेखांकित कीजिए। 05

प्र. 04 'भ्रमरगीत सार' में निर्गुण भक्ति के खंडन एवं सगुण भक्ति के मंडन के संदर्भों को रेखांकित कीजिए। 05

प्र. 05 'बीसलदेव-रास' के ऋतु-वर्णन की पद्धति पर प्रकाश डालते हुए इसका वैशिष्ट्य उजागर कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 विनय-पत्रिका का प्रतिपाद्य बताते हुए विनय-पत्रिका में दास्य भक्ति के सन्दर्भों को स्पष्ट कीजिए। 05

प्र. 02 घनानंद 'प्रेम की पीर' के कवि कहे जाते हैं, 'घनानंद – कवित्त' के आधार पर इसकी प्रामाणिकता का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 03 'मीरां काव्य की भाषा' विषय पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 04 "जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ-साथ भाषा की समास-शक्ति जितनी ही होगी उतना ही वह मुक्तक रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से थी।" इस कथन के आलोक में बिहारी सतसई का मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए। 05

प्र. 05 आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने घनानंद को 'साक्षात रसमूर्ति' कहा है, इस सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए घनानंद के भावबोध का विश्लेषण कीजिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : हिंदी आलोचना **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH04**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 'हिंदी आलोचना के विकास में भारतेंदु मंडल का योगदान' पर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए। 05

प्र. 02 आचार्य रामचंद्र शुक्ल से पूर्व हिंदी आलोचना की प्रगति पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 03 निम्नलिखित आलोचना प्रणालियों में से किन्हीं दो की हिंदी साहित्य के संदर्भ में विस्तृत विवेचना कीजिए। 05

i) ऐतिहासिक आलोचना, ii) तुलनात्मक आलोचना, iii) मनोवैज्ञानिक आलोचना, iv) प्रगतिशील आलोचना

प्र. 04 आलोचना से आप क्या समझते हैं ? एक साहित्यिक विधा के रूप में 'आलोचना' के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए। 05

प्र. 05 'सैद्धांतिक आलोचना' एवं 'व्यवहारिक आलोचना' के आशय को स्पष्ट करते हुए दोनों के अंतर्संबंध की विवेचना कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 "शुक्लजी की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने हिंदी की सैद्धांतिक आलोचना को एक ठोस दार्शनिक आधार दिया।" इस कथन के आलोक में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचनात्मक अवदान पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 02 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आदिकाल संबंधी स्थापनाओं पर विचार कीजिए। 05

प्र. 03 विजयदेव नारायण साही की आलोचनात्मक साहित्य का परिचय देते हुए 'जायसी' की आलोचना में उनके अवदान का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 04 हिंदी की मार्क्सवादी आलोचकीय परंपरा में रामविलास शर्मा का स्थान निर्धारित कीजिए। 05

प्र. 05 डॉ. नगेन्द्र की 'रीतिकाव्य की भूमिका' पुस्तक का परिचय देते हुए पुस्तक का सार प्रस्तुत कीजिए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH20**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 अनुवाद से आप क्या समझते हैं ? वर्तमान समय में अनुवाद की उपयोगिता का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 02 'शब्दानुवाद' का आशय स्पष्ट कीजिए तथा शब्दानुवाद के गुण – दोषों की विवेचना कीजिए। 05

प्र. 03 अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकारों पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 04 साहित्यिक अनुवाद में आने वाली समस्याओं पर विचार कीजिए। 05

प्र. 05 अनुवाद की प्रक्रिया बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि वाक्य रचना अनुवाद को किस प्रकार प्रभावित करती है। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 मशीनी अनुवाद को समझाते हुए आधुनिक प्रौद्योगिकी के युग में मशीनी अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए। 05

प्र. 02 सफल अनुवाद के लिए पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 03 'अनुवादक में अपेक्षित अपरिहार्य गुण' विषय पर टिप्पणी लिखिए। 05

प्र. 04 पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद में योगदान स्पष्ट करते हुए पारिभाषिक शब्दावली के अभाव का अनुवाद पर प्रभाव विश्लेषित कीजिए। 05

प्र. 05 अनुवाद के उपकरण क्या हैं ? विस्तार से बताइए। 05

पाठ्यचर्या (कोर्स) का नाम : विशेष अध्ययन : मीरां **पाठ्यचर्या (कोर्स) कोड : 6.0 ODLMAH23**

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 मीरां के काव्य के अंतर्साक्ष्यों के आलोक में मीरांबाई के व्यक्तित्व के निर्माण में युगीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 02 संप्रदाय-निरपेक्ष कृष्ण भक्त के रूप में मीरां काव्य की मौलिकता उजागर कीजिए। 05

प्र. 03 'मीरां वृहत् पदावली' के आधार पर मीरां काव्य के दार्शनिक आधार का विश्लेषण प्रस्तुत करिए। 05

प्र. 04 ऐतिहासिक सन्दर्भों के साथ मीरां का प्रामाणिक जीवन-वृत्त प्रस्तुत कीजिए। 05

प्र. 05 भक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मीरां की माधुर्योपासना के भक्ति के वैशिष्ट्य को उजागर कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

प्र. 01 मीरां की कविता में स्त्री अस्मिता के बिन्दुओं को रेखांकित कीजिए। 05

प्र. 02 "प्रतिरोध मीरां की कविता की मुख्य वस्तु है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए। 05

प्र. 03 "मीरां-काव्य में सगुण - निर्गुण का भेद स्पष्ट नहीं है।" आलोचक अरविंद सिंह तेजावत के इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 05

प्र. 04 'मीरां वृहत् पदावली' में संकलित मीरां बाई की कविता के सामाजिक सन्दर्भों पर प्रकाश डालिए। 05

प्र. 05 'मीरां वृहत् पदावली' में मीरां के पदों का प्रतिपाद्य सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 05